‘ठुमक चलत’ भजन पर व्याख्या

श्रीगुरुमाई के जन्मदिवस महोत्सव सत्संग में विजु कुलकर्णी जी ने ‘ठुमक चलत’ भजन गाया जो कि सोलहवीं शताब्दी के सन्त-कवि तुलसीदास जी द्वारा रचित है। भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त तुलसीदास जी, इस भजन में बहुत ही सुन्दरता से और विनम्रता से प्रभु श्रीराम का एक छोटे-से बालक के रूप में वर्णन करते हैं।

सत्संग में बाद में, डेविड कैट्ज जी ने, जो ‘मुक्तबोध भारतीय प्राच्य विद्या शोध संस्थान’ के बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स के प्रेसिडेन्ट और चेअरमैन हैं, इस भजन की एक सिखावनी पर संक्षिप्त व्याख्या दी। वह व्याख्या यहाँ दी गई है।

अपने भजन की अन्तिम पंक्ति में तुलसीदास जी कहते हैं : “भगवान के मुखमण्डल का सौन्दर्य अतुलनीय है। प्रभु श्रीराम की तुलना तो बस स्वयं प्रभु श्रीराम से ही की जा सकती है।”

तुलसीदास जी ने यह जो समझ इतने भावपूर्ण रूप में व स्पष्टता से शब्दों में व्यक्त की है, क्या यह *उल्लेखनीय* नहीं है? इस बारे में विचार करें — आप भगवान की तुलना वास्तव में किस चीज़ के साथ कर सकते हैं?

आप कह सकते हैं कि भगवान सूर्य की भाँति हैं, भगवान स्वच्छ-निर्मल नीले आकाश की तरह हैं या इन्द्रधनुष के रंगों की तरह हैं। आप कह सकते हैं कि भगवान एक नन्हे-से मासूम बालक की भाँति निर्दोष और मधुर हैं। फिर भी, क्या आप इनमें किसी भी वर्णन से सन्तुष्ट होंगे? इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि आप भाषा के कौन-से अलंकार का प्रयोग करते हैं, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि आप कौन-सी उपमा का प्रयोग करते हैं, आपको हमेशा ही लगेगा, “इसमें इससे भी बढ़कर कुछ है।”

इस भजन को पढ़ते समय, हो सकता है कि आप सोचें कि तुलसीदास जी भी इसी उलझन में रहे हों। यह उनके लिए एक पहेली थी। उनका हृदय भक्ति से अभिभूत हो चुका था और वे भगवान राम की छवि का महिमागान करना चाहते थे। वे ‘दर्शन’ की अपनी अनुभूति को शब्दों में व्यक्त करना चाहते थे।

अतः उन्होंने प्रकृति को देखा और जो सौन्दर्य उन्हें प्रकृति में दिखाई दिया, उससे उन्होंने भगवान की तुलना करने का प्रयास किया। जो छवियाँ वे देते हैं, वे चाहे कितनी ही सुन्दर और उद्‌बोधक हों, फिर

भी उनमें से कोई भी सन्तोषजनक नहीं है। अतः, भजन के अन्त में तुलसीदास जी इतना ही कहते हैं : "भगवान तो भगवान ही हैं।"

तुलसीदास जी गाते हैं : "भगवान के मुखमण्डल का सौन्दर्य अतुलनीय है। प्रभु श्रीराम की तुलना तो बस स्वयं प्रभु श्रीराम से ही की जा सकती है।"

भजन की यह पंक्ति एक अत्यन्त महान सिखावनी है और इस पर केन्द्रण करके हम सीख सकते हैं कि 'दर्शन' पूर्ण रूप में कैसे प्राप्त करें, जब हम भगवान के समक्ष हों तो उन्हें कैसे पहचानें और कैसे हम भगवान की दिव्यता और उनके तेज की पूर्णता की अनुभूति करें।

भजन की इस पंक्ति से श्रीगुरुमाई की एक सिखावनी का स्मरण हो आता है। गुरुमाई जी कहती हैं :

प्रत्येक व्यक्तित्व में निहित जो अनूठापन है, वह भगवान की शक्ति का ही अंश है।

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।